द्रोणाचार्य

प्र १) रिक्त स्थानों की पूर्ती करें।

अ) आचार्य द्रोण महर्षि भरत्वाज के पुत्र थे।

आ) द्रोण अपनी पत्नी और पुत्र को बड़ा प्रेम करते थे।

इ) सब राजकुमार आश्चर्य से यह करतब देख रहे थे।

ई) द्रोण ने तुरंत धनुष चढ़ाया और कुएँ में तीर मारा।

उ) मित्रता तो बराबरी की हैसियतवालों में ही हो सकती है।

ऊ) द्रोण से बदला लेने की भावना द्रुपद के जीवन का लक्ष्य बन गई।

ए) उसके धृष्टद्युम्न नामक एक पुत्र हुआ और द्रौपदी नाम की कन्या।

ऐ) तुमने कहा था की राजा ही राजा के साथ मित्रता कर सकता है।

प्र २) किसने किससे कहा वो लिखें।

अ) ब्राम्हण तुम्हारा यह व्यवहार सज्जनोचित नहीं है।
द्रुपद ने द्रोण से कहा।

आ) मित्रता की बराबरी हैसियतवालों में ही होनी है।
द्रुपद ने द्रोण से कहा।

इ) मैं गेंद निकालके दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगे?
द्रोण ने राजकुमारों से पुछा।

ई) हम आपकी क्या सेवा कर सकते है?
राजकुमारो ने द्रोण से पुछा।

उ) हे वीरो डरो नहीं।
द्रोणाचार्य ने द्रुपद से कहा।

ऊ) मुझे मित्र कहकर पुकारने का तुम्हें साहस कैसे हुआ।
द्रुपद ने द्रोण से कहा।

प्र ३) विलोम अर्थवाले शब्द लिखें।

अ) मित्र × शत्रु
आ) समाप्त × शुरुआत
इ) पास × दूर
ई) आधा × पूरा
उ) हार × जीत
ऊ) उत्साह × निराशा
ए) गुस्सा × प्यार
ऐ) सम्मान × अपमान
ओ) जीवन × मृत्यु
औ) गर्व × नम्रता

प्र ४) दिए गए शब्दोंका वाक्य में प्रयोग करें।

अ) शिक्षा - राजकुमार शिक्षा लेने हेतु गुरु के साथ गुरुघर गए।

आ) धनुर्विद्या - अर्जुन धनुर्विद्या में पारंगत हो गया।

इ) प्रार्थना - रोज सुबह और शाम को प्रार्थना करनी चाहिए।

ई) गुस्सा - बाबा बहोत गुस्सा करते है।

उ) गेंद - सभी मित्र छुट्टी के दिन गेंद से खेलने गए।

ऊ) निश्चय - सभी मित्रोंने अच्छेसे अभ्यास करने का निश्चय किया।

ए) दावत - सोनू का जन्मदिन होने के कारण उसके घर दावत थी।

ऐ) खेल - अभ्यास के बाद सभी खेलने गए।

ओ) लक्ष्य - बड़े होने के बाद पुलिस बनना सोनू का लक्ष्य था।